सुवर्ण भूमि की लोककथायें

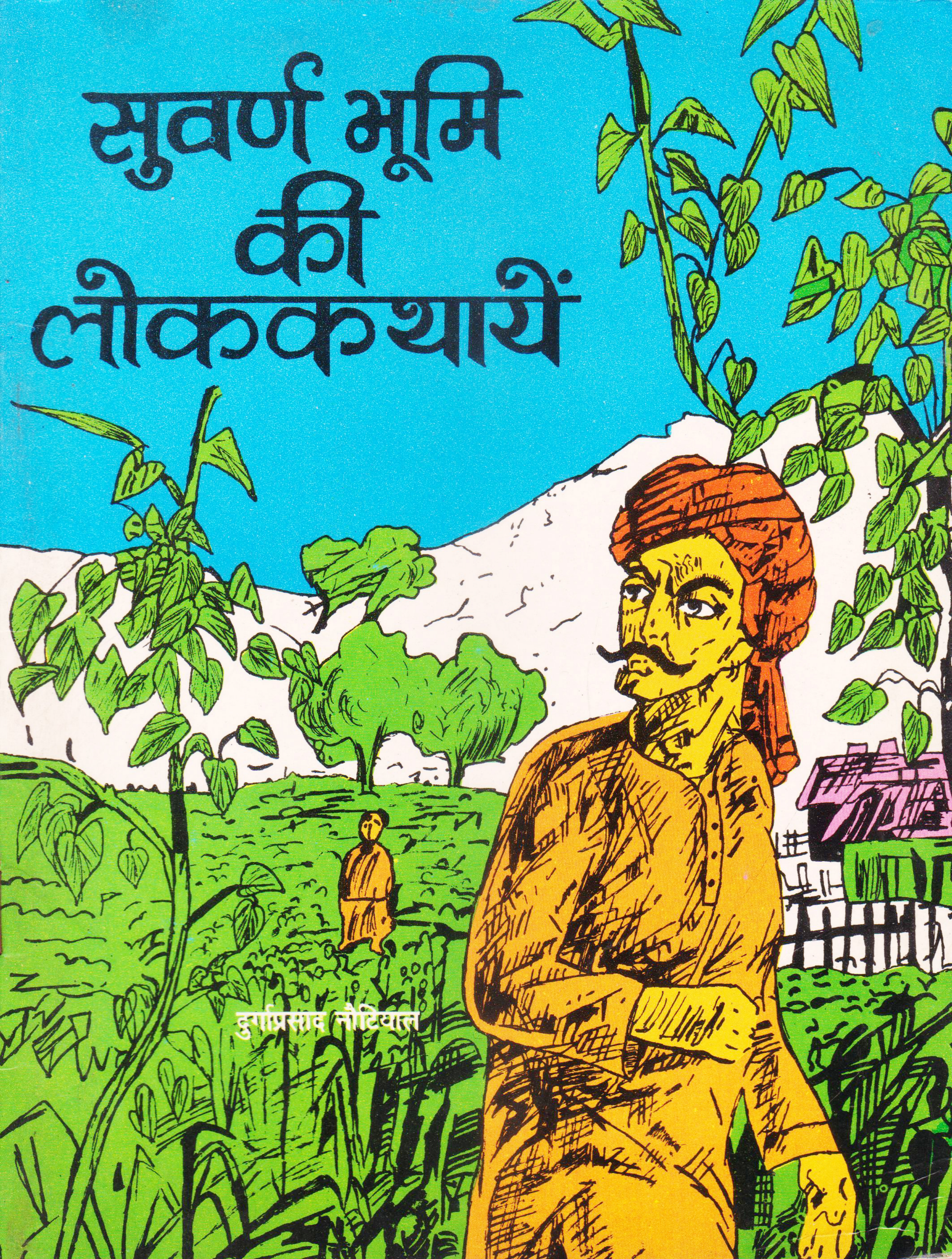

दुर्गाप्रसाद नौटियाल

सुवर्ण-भूमि की लोक कथाएं

दुर्गाप्रसाद नौटियाल

प्रकाशन विभाग
सूचना और प्रसारण मंत्रालय
भारत सरकार

प्रथम संस्करण: पौष 1903 (अक्तूबर 1982)
संक्षिप्त संस्करण: पौष 1903 (अक्तूबर 1991)

© प्रकाशन विभाग

मूल्य : 9.50 रुपये

निदेशक, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, पटियाला हाउस, नई दिल्ली-110001 द्वारा प्रकाशित

विक्रय केन्द्र ● प्रकाशन विभाग

- सुपर बाजार (दूसरी मंजिल), कनाट सर्कस, नई दिल्ली-110001
- कामर्स हाऊस, करीमभाई रोड, बालार्ड पायर, बम्बई-400038
- 8, एसप्लेनेड ईस्ट, कलकत्ता-700001
- एल.एल.ए. आडीटोरियम, 736 अन्नासलै, मद्रास-600002
- बिहार राज्य सहकारी बैंक बिल्डिंग, अशोक राजपथ, पटना-800004
- निकट गवर्नमैंट प्रेस, प्रेस रोड, त्रिवेन्द्रम-695001
- 10-बी, स्टेशन रोड, लखनऊ-226004
- राज्य पुरातत्वीय संग्रहालय बिल्डिंग, पब्लिक गार्डन्स, हैदराबाद-500004

विज्युल इण्टरप्राईजेज, ई-39, सैक्टर 7, नोएडा द्वारा मुद्रित।

दो बातें

हमारे प्राचीन ग्रन्थों यथा वृहत संहिता तथा मार्कण्डेय पुराण में उत्तर प्रदेश के उत्तरी अंचल (जिसे उत्तराखण्ड के नाम से भी जाना जाता है) को सुवर्ण भूमि अथवा सुवर्ण नाम से सम्बोधित किया गया है। महाभारतकालीन इतिहास के अध्ययन से विदित होता है कि महाराजा युधिष्ठिर ने राजसूय नामक महायज्ञ सम्पन्न करने के लिए पिपलिक नाम का सोना इसी भू-भाग से मंगवाया था। उस काल में उक्त भू-भाग कुणिन्द (यमुना की घाटी) तथा तंगण (गंगा की घाटी) नाम से विख्यात था। प्रसिद्ध ऐतिहासिक चीनी यात्री ह्वैनसांग ने भी सातवीं सदी ई० की अपनी यात्रा में इस भू-भाग को सुवर्ण भूमि नाम से पुकारा है। प्रस्तुत लोक कथाएं उसी प्रदेश की हैं।

मेरी पूजनीया मां को कथा सुनाने का कमाल हासिल है। मां के सम्पर्क में आने वाला शायद ही ऐसा कोई स्त्री-पुरुष व बच्चा होगा जो मां की इस विलक्षण कला से परिचित न हो। मैं जब छोटा था तो मां रोज रात को जाड़ों की लम्बी ठिठुरती रातों में गुदगुदे लिहाफ के अन्दर मुझे अपने साथ लिटाकर एक से एक दिलचस्प कथा सुनाकर मेरा भरपूर मनोरंजन किया करती थी। दिनभर काम-धंधे से बुरी तरह थकी-मांदी मां कभी-कभी तो कथा कहते-कहते स्वयं ऊंघने लग जाया करती और न जाने हम दोनों ही कथा के किस पड़ाव पर कब सो जाया करते।

बड़ा होने पर मैंने जब विभिन्न प्रदेशों और देशों की लोककथाएं पढ़ीं, तो मुझे भी लोक कथाएं लिखने की धुन सवार हो गई। अब क्या था, मैंने लोक कथाएं लिखने का पक्का मन बना लिया। संयोग से दस-बारह साल के पत्रकारिता के कच्चे-पक्के अनुभव ने कलम पकड़नी सिखा दी थी। अब क्या चाहिए था। अपनी स्मृति के लघु भंडार से मैंने प्रयास कर कुछेक कथा-कंकालों को टटोल लिया। फिर उन ठठरियों पर अत्यन्त सावधानी के साथ शब्दों की सांस और भाषा शैली का मांस चढ़ाया। प्रस्तुत कथाओं के जन्म की यही संक्षिप्त कथा है। बेशक इस सम्पूर्ण क्रिया के चलते मां से सुनी कुछ कथाएं तो पूरी की पूरी याद हो आईं और कुछ को दुबारा मां से सुन कर पूरा करना पड़ा है। मां ने मुझे पुन: उसी जादुई अंदाज में कथाएं सुनाईं। इस प्रकार कुल मिलाकर इन सब कथाओं का शत-प्रतिशत श्रेय मां को ही है। यह उसी की थाती है, उसी की धरोहर।

पाठकों की कथाओं में बराबर दिलचस्पी को बनाए रखने के उद्देश्य से मैंने मां की उस जादुई शैली की मौलिकता को यथाशक्य अक्षुण्ण बनाये रखने का भरसक प्रयास किया है। अस्तु, इससे अधिक मां के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन और उसके भारी ऋण से उऋण होने का मेरे पास भला और

भाग्यशाली किसान

किसी गांव में एक गरीब किसान था। उसकी तीन लड़कियां थीं। पति-पत्नी दोनों कठोर परिश्रम करके बड़ी कठिनाई से परिवार के लिए दो जून रोटी जुटा पाते थे। किसान बड़ा भोला और सीधा-सच्चा था।

तीनों लड़कियाँ जब सयानी हुईं, तो किसान को उनकी शादी की चिंता सताने लगी। लड़कियां रूपवती और स्वस्थ थीं, लेकिन गरीब घर के कारण कोई भी रिश्ता करने के लिए तैयार नहीं हो रहा था।

एक दिन की बात है। किसान शहर की ओर जा रहा था। सहसा रास्ते में उसकी भेंट एक फकीर से हो गयी। फकीर ने चिंतित किसान से उसकी चिंता का कारण पूछा, जवाब में उसने जवान लड़कियों के विवाह की बात फकीर को बताई। फकीर ने कुछ देर सोचा और किसान से कहा—''तुम अपनी तीनों लड़कियों को क्रमशः गिद्ध, बंदर और रीछ को ब्याह देना। ये तीनों जानवर तुम्हारे घर बारी-बारी से आएंगे। इनको लड़कियां देने में तुम जरा भी हिचकिचाना नहीं। ये तीनों राजकुमार थे और किसी फकीर के शाप के कारण बंदर, रीछ और गिद्ध बने हैं। जब शाप की अवधि समाप्त हो जाएगी तो ये अपने असली रूप में आ जाएंगे।'' यह कहकर फकीर एकाएक किसान की आंखों से ओझल हो गया।

किसान शहर जाने के बजाय उल्टा घर की ओर चल दिया। उसे लगा कि उसकी चिन्ता का फकीर ने चुटकी बजाते ही हल निकाल लिया है। घर पहुंच कर सारी बात उसने अपनी पत्नी को बताई। सुनकर पत्नी के विस्मय और हर्ष का पारावार न रहा।

दिन बीतते गए। एक दिन सवेरे किसान के द्वार पर एक बंदर आया। उसने मनुष्य की बोली में किसान से बातचीत की और उसकी सबसे बड़ी लड़की से विवाह करने की इच्छा प्रकट की। फकीर की बात किसान को याद थी। बंदर को देखकर तो उनका विश्वास पक्का हो गया। उसने अपनी लड़की को फकीर की कही हुई बात बता दी। लड़की बुद्धिमान थी। वह बंदर के साथ विवाह करने के लिए सहर्ष तैयार हो गई। किसान ने लड़की का हाथ बंदर को पकड़ा दिया। बंदर लड़की को अपने साथ लेकर वहां से विदा हो गया।

इसी प्रकार किसान ने शेष दो लड़कियों का विवाह भी क्रमशः रीछ और गिद्ध से कर दिया। तीनों लड़कियों को ब्याहने के बाद किसान और उसकी पत्नी अकेले रह गए।

विवाह के बहुत दिन बाद एक दिन किसान की पत्नी ने उससे कहा कि जब से लड़कियों की शादी हुई है, तब से हमने उनकी कुशल-क्षेम नहीं ली। उन्होंने तय किया कि किसान एक-एक करके तीनों लड़कियों के यहां जाएगा।

एक दिन सवेरे किसान सबसे बड़ी लड़की को मिलने के लिए चल पड़ा। काफी लम्बा रास्ता तय कर वह शाम तक बंदर के यहां पहुंच गया। अपने पिता को देखकर पुत्री की आंखों में आंसू आ गए। बंदर भी ससुर को देखकर बहुत खुश हुआ। सोचने लगा ससुर की क्या आवभगत करूं। पास ही एक बगीचा था। उसमें आम और जामुन के पेड़ फलों से झुक रहे थे। बंदर उछलता-कूदता गया और देखते ही देखते ढेर सारे आम और जामुन ले आया। किसान अपने दामाद के पराक्रम को देखकर बहुत खुश हुआ। उसने छककर आम और जामुन खाए। फिर सो गया। बंदर ने अपने ससुर को दो-तीन दिन अपने यहां ही रोक लिया। रोज किसान छककर फल डकारने लगा। जब फल खाते-खाते वह ऊब गया, तो उसने घर वापस जाने की इच्छा व्यक्त की। पुत्री और दामाद ने उसको ढेर सारे फल देकर खुशी-खुशी विदा कर दिया।

किसान ने घर आकर पत्नी को सारे हाल-समाचार बताए और साथ ही कहा कि वह दामाद से बिल्कुल नयी तरकीब सीखकर आया है। पत्नी के पूछने पर उसने कहा कि अगले दिन सबेरे तू स्वयं देख लेगी। पत्नी यह सुनकर चुप हो गयी, क्योंकि वह किसान के सीधेपन और मूर्खता से भली-भांति परिचित थी। उसने समझ लिया कि वह कोई ऊटपटांग तरकीब सीख कर आया होगा।

अगले दिन सबेरे मुंह अंधेरे किसान उठा और सीधे गांव के जमींदार के बाग में जा पहुंचा। फिर उसने अपने बंदर दामाद की तरह बाग में अंधाधुंध फल तोड़ने शुरू कर दिए। माली की झोंपड़ी वहीं थी। उसने सोचा बाग में बंदर आए हैं। वह फौरन उठा और बाग में पहुंचा। देखता क्या है कि गांव का किसान पेड़ पर चढ़कर बंदरों की तरह फल तोड़ रहा है। उसने किसान को दो चार गालियां सुनाते हुए तुरन्त नीचे उतरने को कहा। डंडा हाथ में पकड़े क्रोध में कांपते हुए माली को पेड़ के नीचे खड़ा हुआ देखकर किसान की घिग्घी बंध गई। डर के मारे वह चुपचाप नीचे उतर आया। नीचे उतरने पर उसने किसान की वो पिटाई की कि उसे छठी का दूध याद आ गया।

उसके घर पहुंचने से पहले ही पत्नी को सारी बात का पता चल चुका था। अब क्या था। वह किसान की मूर्खता पर बरस पड़ी। किसान भी बहुत पछताया। किसान को स्वस्थ होने में पूरा एक महीना लग गया। सारे गांव में उसकी बदनामी हो गयी। गांव में मुंह दिखाना उसे मुश्किल हो गया।

स्वस्थ होने पर वह अपनी दूसरी लड़की से मिलने के लिए चल पड़ा। पहाड़, नदी, जंगल और बीहड़ रास्ते को पार करता हुआ वह अपने रीछ दामाद के यहां जा पहुंचा। पिता को देखकर वे दोनों खुशी से नाच उठे। रीछ ससुर के चारों ओर चक्कर काटने लगा। फिर अपनी पत्नी के परामर्श पर उसने ससुर की गर्म-गर्म पकौड़ियों से खातिरदारी करनी चाही। पास ही में लोबिया का भरा-पूरा खेत था। रीछ ने पत्नी से कहा कि तू तेल की कढ़ाई गरम कर,मैं अभी आया। किसान सारी बात को बारीकी से देख-सुन रहा था।

रीछ तेजी के साथ लोबिया के खेत में जा पहुंचा। वहां पहुंचते ही लोबिया की फलियों को निगलने लगा तथा कुछ ही देर में काफी फलियां निगल गया। फिर भागता हुआ घर आ पहुंचा। घर पहुंच कर उसने लोबिया की फलियों को ज्यों का त्यों उगल दिया। उसकी पत्नी ने जल्दी से दाने अलग किए और फिर गरम तेल में स्वादिष्ट पकौड़ियां बनाई। ऐसी स्वादिष्ट पकौड़ियां किसान ने अपने जीवन में पहले कभी नहीं खायी थीं। वह एक हफ्ते तक वहीं रुक गया। अब तो रोज खूब छककर पकौड़ियां खाता और निश्चिंत लेटा रहता। लेकिन इससे भी वह जल्दी ही ऊब गया। उसे अपनी पत्नी की याद सताने लगी और इससे भी अधिक उसे पत्नी को नयी तरकीब बताने की उतावली परेशान करने लगी। उसने बेटी-दामाद से घर वापस जाने की इच्छा व्यक्त की। रीछ ने ससुर के थैले में ढेर सारे मटर और लोबिया भर कर खुशी-खुशी विदा कर दिया।

घर पहुंचने पर किसान ने थैला पत्नी को थमाते हुए कहा, ''अरी, इस बार तो मैं बहुत ही नयी और लाभदायक तरकीब सीख कर आया हूं।'' पत्नी ने व्यंग्य करते हुए जवाब दिया, ''जैसी तरकीब पहले सीखी वैसी ही घुटने फुड़वाने वाली तरकीब यह भी होगी।'' इस पर किसान ने उसे विश्वास दिलाते हुए समझाया कि यह तरकीब वैसी नहीं है। पत्नी ने तरकीब जानने की जिज्ञासा जाहिर की तो किसान ने पहले की ही तरह जवाब दिया कि अगले दिन वह खुद देख लेगी। पत्नी नाराज हो कर सो गयी। किसान भी सो गया। रात भर उसे नींद नहीं आयी। सोचता रहा कब रात खुले और कब वह अपनी नई तरकीब से पत्नी को अचम्भे में डाले।

सुबह होते ही किसान उठा। पत्नी सो रही थी। उसने उसे जगाया। फिर उससे कहा कि तू कढ़ाई में तेल गरम कर रखना, मैं आनन-फानन में आता हूं। यह कहकर वह खेत में जा पहुंचा। अब क्या था। रीछ की तरह वह भी लोबिया की फलियां डकारने लगा। कुछ ही देर में उसका पेट भर गया। दौड़ता हुआ घर आया। पत्नी उसकी आज्ञा के अनुसार तेल की कढ़ाई गरम कर उसकी प्रतीक्षा में बैठी हुई कुढ़ रही थी। किसान घर पहुंचते ही जमीन पर लेट गया। पेट दर्द के कारण वह तड़पने लगा। अब तो पत्नी का सारा क्रोध हवा हो गया। किसान को मरणासन्न देखकर उसके

चेहरे पर हवाइयां उड़ने लगीं। उसने सोचा, इसकी यह तरकीब जान लेकर ही रहेगी। वह मूर्ख पति की बुद्धिमान पत्नी थी। वह घबरायी नहीं। तुरन्त गांव के वैद्य को बुलाकर ले आयी। वैद्य ने किसान की हालत देख कर उसे उल्टी होने की दवा दी। कुछ देर बाद उसे उल्टियां होने लगी। उल्टी में निरे लोबिये निकलने लगे। यह देखकर सब उसकी मूर्खता पर हंसने लगे।

इस बार किसान को पूर्ण स्वस्थ होने में दो महीने लग गए। पत्नी उसकी बीमारी से तंग आ गयी। स्वस्थ होने पर किसान ने सबसे छोटी लड़की के यहां जाने का विचार बनाया।

अगले दिन वह गिद्ध दामाद के यहां चल पड़ा। गिद्ध का घर एक पहाड़ी पर था। किसान में पहले जैसी चलने की हिम्मत नहीं थी। लगातार दो दिन चलने के बाद कहीं जाकर तीसरे दिन वह गिद्ध के यहां पहुंच पाया। बेटी और दामाद किसान को देखकर बेहद प्रसन्न हुए। गिद्ध ने अपनी पत्नी से कहा कि 'ससुर जी की हम क्या सेवा कर सकते हैं ?' उत्तर में पत्नी ने बताया कि पिताजी ने अपने गांव से बाहर बहुत ही कम देखा है। इसलिए उनको सैर करवानी चाहिए। पत्नी का सुझाव गिद्ध को जंच गया। ससुर को अपने पंखों में बैठा कर उड़ने लगा। कुछ ही समय में उसने ससुर को दुनिया का एक बड़ा भारी भाग दिखा डाला। अजीबोगरीब दुनिया देखकर किसान के आश्चर्य का ठिकाना न रहा। उसे लगा कि वह जीते जी स्वर्ग पहुंच गया है। फिर क्या था। गिद्ध रोज ससुर को सैर कराने लगा। लेकिन इस सैर से भी किसान कुछ दिन बाद ऊब गया। वह नयी तरकीब सीख गया था। सोचने लगा, "इस बार तो पत्नी को अपनी कला दिखा के ही रहूंगा।"

किसान ने घर वापस लौटने की इच्छा व्यक्त की, तो गिद्ध ने तुरन्त उसे अपने पंखों में बैठाया और कुछ ही समय में उसे उसके गांव के पास छोड़कर वापस चला आया। इस बार किसान को वापस जाने में बिल्कुल भी समय नहीं लगा। कुछ ही देर में वह घर पहुंच गया। घर पहुंच कर पत्नी से डींगे हांकने लगा। जैसा उसने देखा था, वह सब पत्नी को कह सुनाया। यह कह कर उसने पत्नी से कहा कि यदि वह भी वैसा देखना चाहती है, तो तैयार हो जाए। पत्नी की खुशी का ठिकाना न रहा। उसने नहा धोकर नये-नये कपड़े पहने और जल्दी ही बन-ठन कर तैयार हो गयी। किसान ने अपने साथ दो सूप (जिनसे अन्न साफ किया जाता है) और मजबूत-सी दो रस्सियां लीं और पत्नी को साथ लेकर पहाड़ की चोटी की ओर चल पड़ा। कुछ ही देर में दोनों चोटी पर पहुंच गए।

चोटी पर पहुंच कर किसान ने दोनों सूपों को अपनी दोनों बगलों में कसकर बांधा। फिर पत्नी से अपनी पीठ पर चढ़ने के लिए कहा। पत्नी ने वैसा ही किया। पीठ पर पत्नी के बैठते ही

किसान ने हुर्रर . . . . . . कहते हुए उड़ने के उद्देश्य से नीचे छलांग लगा दी। अगले ही क्षण वह पत्नी समेत नीचे गड्ढे में जा गिरा। गिरते ही दोनों की हड्डी-पसली एक हो गयी।

संयोग से उसी समय गिद्ध उड़ता हुआ उधर आया। उसकी नजर उन पर पड़ी। वह अपने सास-ससुर को पहचान गया। उसने तुरन्त बंदर और रीछ को खबर दी। वे दोनों भी वहां आ पहुंचे। बंदर कहीं से एक जड़ी खोद लाया। उन दोनों की सांस चल रही थी। बंदर ने उनको जड़ी सुंघायी। जड़ी सूंघते ही दोनों होश में आ गए। फिर रीछ ने एक और जड़ी ढूंढ निकाली। उसको पानी में घिसकर उनके सारे बदन पर लगाया। कुछ समय पश्चात दोनों स्वस्थ हो गए।

इस बीच बंदर, रीछ और गिद्ध के शाप की अवधि समाप्त हो गयी। तीनों के तीनों खूबसूरत नवयुवकों में बदल गए। वे तीनों भाई एक राजा के लड़के थे। अपने सास-ससुर को लेकर तीनों अपने राज्य की ओर चल पड़े।

तब से किसान और उसकी पत्नी जीवनपर्यन्त उन्हीं के यहां रहे और तीनों राजकुमार अपनी पत्नियों के साथ सर्वसुख भोगते हुए आनन्द से रहने लगे।

पौमू दा

किसी गांव में पौमू नामक एक आदमी रहता था। उम्र उसकी पैंतीस-छत्तीस की रही होगी। गांव में जो काम किसी से न होता, वह पौमू कर दिया करता था। धीरे-धीरे उसका नाम आसपास के गांवों तक फैल गया। अब लोग उसे पौमू दा (भाई) कहकर पुकारने लगे।

पौमू दा अच्छे खाते-पीते घर का था। वह अविवाहित था। इसका कारण था, जब तक उसकी अवस्था पच्चीस-तीस के आसपास थी, तब तो उसने विवाह किया नहीं और जब वह पैंतीस पार कर गया तब कोई उससे विवाह करने को तैयार नहीं हुआ। बस इसी में मारा गया बेचारा पौमू दा।

जवानी में तो उसने न विवाह की आवश्यकता महसूस की और न ही उपयोगिता समझी। लेकिन उम्र पक्की होते ही उसे ऐसा लगने लगा कि बिना विवाह के जीवन व्यर्थ है। विवाह करने की धुन उसके सिर पर सवार हो गयी। कोई सगा-सम्बन्धी अथवा रिश्तेदार उसका ऐसा था नहीं, जो उसकी शादी की बात चलाता। अतएव उसने अपने आप अपने लिए पत्नी ढूंढने का निश्चय किया।

पौमू दा एक दिन अपने घर से बाहर चल पड़ा। चलते-चलते वह एक गांव में पहुंच गया। वह चतुर लोगों का गांव था। जो भी उस गांव में पहुंच जाता, बिना ठगे हुए वापस न आता। चाहे कोई कितना ही चतुर चालाक क्यों न होता, लेकिन गांव के घाघ ठगों से पार पाना बड़ा मुश्किल था।

रात पड़ गई थी। पौमू दा को उसी गांव में रात व्यतीत करनी थी। वह पूछते-पूछते गांव के प्रधान के घर जा पहुंचा। उसने प्रधान से एक रात ठहरने के लिए जगह मांगी। प्रधान ने आने का कारण व परिचय आदि पूछा, तो पौमू दा ने सब कुछ सच-सच बता दिया। सुनकर प्रधान बहुत खुश हुआ। उसने सोचा, आज तो बहुत दिनों के बाद भाग्य से मोटी मुर्गी हाथ आयी है। यह सोचकर उसने पौमू दा को खूब स्वादिष्ट भोजन कराया और फिर अलग कमरे में सुला दिया।

इसके बाद प्रधान ने रात में ही गांव के लोगों की एक बैठक बुलायी। बैठक में पौमू दा को ठगने का बाकायदा कार्यक्रम बनाया गया। इसके बाद सब लोग अपने-अपने घर सोने चले गए।

प्रधान की दो पत्नियां थीं। एक विवाहिता और दूसरी वैसे ही भगा कर लायी हुई। दूसरी पत्नी बेहद खूबसूरत और जवान थी। पौमू दा और प्रधान की बातचीत वह बड़े ध्यान से सुन रही थी। बातचीत सुनते हुए उसने मन ही मन पौमू दा के साथ भाग जाने की योजना बना डाली।

जब प्रधान पौमू दा को सुलाकर गांव में चला गया तो वह दबे पांव पौमू दा के पास आयी। पौमू दा को अपरिचित स्थान पर नींद नहीं आ रही थी। वह जगा हुआ था। उसने जाकर पौमू दा को सारी बात बतायी और साथ ही उससे कहा कि हम दोनों यहां से भाग जाएंगे। अंधे को क्या चाहिए दो आंखें। पौमू दा तुरन्त तैयार हो गया। इसके बाद वह वापस चली गयी और कुछ ही देर बाद ढेर सारे गहने साथ लेकर चुपचाप पौमू दा के पास आ गयी।

उधर प्रधान पौमू दा को ठगने की बात सोच रहा था और इधर पौमू दा उसकी पत्नी को लेकर आधी रात में ही नौ-दो ग्यारह हो गया। और सुबह होते-होते पौमू दा प्रधान की पत्नी को लेकर अपने घर पहुंच चुका था।

भोर होते ही पौमू दा को ठगने के इरादे से गांव के पांच सात छंटे हुए आदमी प्रधान के मकान पर आ पहुंचे। प्रधान सोया हुआ था। उसकी पत्नी ने उसे उठाया। वह हड़बड़ाकर बाहर आया। फिर सीधा उस कमरे की ओर चल पड़ा, जहां पौमू दा को सुला रखा था। देखता क्या है कि पौमू दा नदारद है। उसने तनिक गुस्से में आकर पत्नी से पूछा--''असाडू की मां, मेहमान कहां है ?'' उत्तर में पत्नी ने अपनी अनभिज्ञता प्रकट की।

प्रधान ने फिर पूछा--''और छोटी मां (दूसरी पत्नी) कहां है ?'' ''लेकिन उसका भी पता नहीं है।''--उसने बड़ी मायूसी से उत्तर दिया। यह सुनकर प्रधान को समझते देर न लगी कि जिसको ठगने की वह रात भर योजना बना रहा था, वह उसी को ठग कर चला गया है। यह जानकर वह सिर पीटकर बैठ गया। धीरे-धीरे सबको वास्तविक स्थिति का ज्ञान हो गया। अब तो वहां उपस्थित आदमी एक-एक कर खिसकने लगे।

सारे गांव में खबर फैल गयी कि पौमू दा उड़लख्या कज्याण (भगा कर लायी गयी औरत) ले आया है। कुछ उसकी प्रशंसा करने लगे और कुछ नाक-भौं सिकोड़ने लगे। किन्तु उस पर किसी भी बात का कोई असर न पड़ा। उसे तो अपने काम से मतलब रहता था। उसकी बला से भाड़ में जाए दुनिया।

पौमू दा पत्नी के साथ आनन्द से समय व्यतीत करने लगा। समय बीतता गया। दो-चार महीने तो उसके बड़े मजे में बीते, किन्तु उसके बाद उसकी पत्नी बात-बात पर उससे लड़ने लगी।

वह कई घर होकर आयी थी, जहां भी जाती, उसका यही हाल था। पौमू दा को अपनी इज्जत रखने के लिए उसकी हर उचित-अनुचित मांग और बात माननी पड़ती थी। किन्तु फिर भी रोज खटपट बढ़ती ही गयी।

एक दिन पौमू दा किसी काम से शहर गया हुआ था। शाम होने पर वह वापस घर आया। देखता क्या है--पत्नी खाट पर लेटी हुई है। कारण पूछने पर पत्नी बोली--"मेरे लिये सात सियारों की सात साबित खालें ला, तब मैं तेरे घर रहूंगी, वरना सम्भाल अपना चूल्हा-चक्की, मैं जाती हूं।"

यह सुनकर पौमू दा हक्का-बक्का रह गया। सोचने लगा यह कैसी विचित्र शर्त है। उसने उसे लाख समझाया-बुझाया, किन्तु वह टस से मस नहीं हुई। अन्त में पौमू दा को विवश होकर यह शर्त स्वीकार करनी पड़ी।

पौमू दा के पास जमीन-जायदाद और धन-सम्पत्ति बहुत थी। आगे-पीछे उसका कोई था नहीं। पत्नी सोचती थी कि किसी तरह यह बूढ़ा मर जाए, तो फिर खूब गुलछर्रे उड़ाए। इसी उद्देश्य से उसने पौमू दा के सामने इतनी कठिन शर्त रखी थी।

पौमू दा को उस रात नींद नहीं आयी। रात भर सोचता रहा कि वह कैसे सात सियारों की खालें लायेगा। एक दो खाल होती तो भी ले आता, लेकिन सात खालें लाना कितनी टेढ़ी खीर है और वह भी सियार जैसे चालाक जानवर की। इसी उधेड़बुन में सुबह हो गयी। वह उठा। नित्य कार्य से निवृत्त होकर उसने थोड़ा-बहुत कलेवा किया और फिर चल पड़ा जंगल की ओर।

जंगल गांव से अधिक दूर नहीं था। जल्दी ही वह वहां पहुंच गया। वह एक पेड़ के नीचे बैठकर सुस्ताने लगा। तभी सहसा उसके मस्तिष्क में एक तरकीब सूझी। वह पक्षियों के पंख एकत्र करने लगा। कुछ देर में उसने ढेर सारे पंख इकट्ठे कर लिये।

अचानक उधर से एक सियार गुजरा। सियार ने किसी आदमी को कभी भी इस तरह पक्षियों के पंख एकत्र करते नहीं देखा था। वह पौमू दा के पास आया और उसने उसका नाम और पंख एकत्र करने का कारण पूछा। पौमू दा ने बड़ी आत्मीयता से उत्तर दिया--"सियार भय्या, मेरा नाम पौमू दा है। क्या तुझे नहीं मालूम है कि महाप्रलय होने वाली है। महाप्रलय से बचने का बस एक ही उपाय है। उड़कर भाग जाना। सो मैं पंख एकत्र कर रहा हूं। पंख अपने बदन पर लगाकर मैं फुर्र से उड़ जाऊंगा।"

महाप्रलय का नाम सुनकर सियार के पैरों के नीचे से जमीन खिसक गयी। एक क्षण वह खड़ा रह गया। फिर पौमू दा के पैरों में सिर रखकर बोला--"पौमू दा, मेरे परिवार में सात सदस्य हैं। मैं तुम्हारे पैर पड़ता हूं। पहले हम पर पंख लगा दो। ताकि हम महाप्रलय आने से पहले ही उड़ जाएं। तुम तो पंख लगाने का काम जानते ही हो, अपने पर बाद में भी लगा सकते हो, हमारी रक्षा करो।"

पौमू दा तो ऐसे मौके की तलाश में था ही। कुछ देर वह मौन रहा। फिर सियार की प्रार्थना उसने स्वीकार कर ली। उसने सियार से अपने बाल-बच्चों को लाने के लिए कहा। सियार की खुशी का ठिकाना न रहा। वह प्रसन्नता से उछलता-कूदता अपने घर की ओर चल पड़ा।

सियार के जाते ही पौमू दा ने दरांती पैनी करनी शुरू कर दी। दरांती तेज कर वह फिर पहले की तरह पंख एकत्र करने में जुट गया।

उधर सियार कुछ ही देर में अपने घर जा पहुंचा। पत्नी को उसने महाप्रलय और पंख लगाकर उड़ने वाली सारी बात बतायी। सुनकर वह भी बड़ी खुश हुई। तुरन्त सपरिवार चलने के लिए तैयार हो गयी।

सियार को सामने देखकर पौमू दा ने उसको बैठने का संकेत किया। वे सबके सब संकेत पाते ही चुपचाप बैठ गए। जब वे बैठ गए, तो सियार की ओर मुड़कर पौमू दा बड़े प्रेम से बोला-- "सियार भाई, तुम सब एक पंक्ति में बैठ जाओ। फिर एक-एक कर मैं तुम्हें बुलाऊंगा और पंख लगा कर उड़ा दूंगा। लेकिन एक बात है तुम सब आंखें बन्द कर चुपचाप बैठ जाओ। यदि किसी ने बीच में आंख खोली तो उसकी आंखें फूट जाएंगी।"

अगले ही क्षण सबके सब सियार पंक्ति बनाकर बैठ गए। फिर सबने अपनी आंखें मीच लीं। अब पौमू दा ने आवाज दी, सियार उसके पास गया। उसने सियार के हाथ-पैर एक पेड़ से मजबूत रस्सी से बांधे और फिर तेज धार वाली दरांती से उसकी खाल निकालने लगा। सियार को असहनीय दर्द हुआ, तो उसने 'आह, आह' की आवाज की। यह सुनकर पौमू दा ने धमकी भरे स्वर में कहा--"जरा सी आई-वाई की, तो पंख नहीं लगाऊंगा।" अब तो सियार विवश होकर चुपचाप दर्द सहता गया। कुछ ही देर में उसका प्राणान्त हो गया। पौमू दा ने तेजी से उसकी खाल उतारी और मरे सियार को एक ओर फैंक दिया।

इसके बाद सियारनी गयी। उसका भी यही हाल हुआ। उसके बाद सियार का सबसे बड़ा बच्चा गया। पौमू दा उसकी भी खाल उतारने लगा।

सियार के चार बच्चे चुपचाप आंखें मींचे अपनी बारी की प्रतीक्षा कर रहे थे। उनमें जो सबसे छोटा सियार था, वह एक आंख का काना था। लेकिन था बड़ा होशियार और चालाक। अपने माता-पिता और भाई की 'आह-आह' सुनकर उसका माथा ठनक गया। उसे लगा कि दाल में अवश्य कुछ काला है। अब क्या था। नाना-प्रकार के विचार और भाव उसके मस्तिष्क में चढ़ने लगे। उससे न रहा गया। उसने सोचा, "एक आंख तो फूटी हुई है ही, दूसरी भी फूट जाएगी तो क्या फर्क पड़ता है। लेकिन आंख खोलकर देख तो लूं कि आखिर मामला है क्या।" यह सोचकर उसने धीरे से अपनी आंख खोली, उसने जो कुछ देखा, उससे उसके रोंगटे खड़े हो गए। पौमू दा के वेश में काल उसे साक्षात् दिखाई दिया। उसने अपनी बगल में बैठी बहन को सचेत किया। उसका संकेत समझ कर उसने भी आंखें खोल दीं।

अपने भाई और माता-पिता की लाशें देख कर उसके मुंह से एक भयंकर चित्कार निकल पड़ी जिससे उसके और भाइयों ने भी घबरा कर आंखें खोल दी। फिर तो मारे भय और आतंक के वे चारों भाई सिर पर पैर रखकर बेतहाशा भागने लगे। और चार-पांच मील भागकर ही उन्होंने चैन की सांस ली। सब भाई-बहन काने भाई की बुद्धि और सूझबूझ की भूरि-भूरि प्रशंसा करने लगे।

उधर पौमू दा के पास सियारों की तीन खालें हो गयी थीं। उसने खालें उठाईं और घर की ओर चल पड़ा। अब उसे चार खालें और जुटानी थीं। घर पहुंच कर उसने तीन खालें पत्नी को दीं और शेष चार खालें अगले दिन लाने का वायदा किया। पत्नी तो सात खालें चाहती थी। वह तीन खालें पाकर खुश नहीं हुई। ऐंठी ही रही।

पौमू दा खाना खाकर सोने चला गया। लेकिन चिंता के मारे उसे रात भर नींद नहीं आयी।

अगले दिन बड़े तड़के सबेरे ही उठकर जंगल की ओर चल पड़ा। इस बार वह अपने साथ कुदाल और फावड़ा भी लेता गया।

जल्दी ही पौमू दा जंगल पहुंच गया। एक पेड़ के नीचे वह विचारमग्न बैठ गया। सहसा उसे एक नयी तरकीब सूझी। वह गड्डा खोदने लगा। संयोग से उधर चार सियारों की एक टोली आ पहुंची। टोली के सरदार सियार ने पौमू दा से उसका नाम और गड्डा खोदने का कारण पूछा। जवाब में पौमू दा ने उसे बताया--"सियार भाई, मेरा नाम पौमू दा है। मैं अभी-अभी शहर से आया हूं। शहर में खबर है कि राक्षस आ रहा है। वैसे जंगल में तो राक्षस ने जो गजब ढाया है, वह तुमसे क्या कहूं तुम जानते ही होगे।"

सियार ने यह सुनकर और जानने की उत्सुकता प्रकट की। सियार को व्यग्र देखकर पौमू दा बोला--"क्या तुमने जंगल में पड़ी अपने भाइयों की लाशें नहीं देखी हैं, राक्षस किस नृशंसता से

उनकी जीते जी खालें उतार कर ले गया है। लगता है, तुमने नहीं देखी हैं। आओ मैं तुम्हें उनकी लाशें दिखाता हूं, ताकि तुम्हें विश्वास हो जाए।''

यह कहते हुए पौमू दा ने उन्हें अपने साथ चलने को कहा। अब आगे-आगे पौमू दा और उसके पीछे चलने लगे चार सियार। कुछ देर बाद वे उस स्थान पर पहुंच गए, जहां सचमुच चार सियारों की लाशें बिखरी पड़ी थीं। उनके शरीर बिना खाल के पड़े थे। सियारों ने देखा तो उनके रोंगटे खड़े हो गए। मारे भय के वे थर-थर कांपने लगे।

उचित अवसर और अनुकूल स्थिति देखकर पौमू दा बोला, ''राक्षस के भय के कारण ही मैं गड्ढा खोद रहा हूं। इससे पहले कि राक्षस आये, मैं गड्ढे में छिप जाऊंगा। जब राक्षस वापस चला जाएगा, तो फिर बाहर आ जाऊंगा। राक्षस से बचने का इसके अतिरिक्त इस समय और चारा ही क्या है।''

यह सुनकर सियारों का सरदार पौमू दा के पैरों में पड़कर गिड़गिड़ाने लगा--''पौमू दा, मैं तुम्हारे पैरों पड़ता हूं। हमारी जान बचा दो। हम जीवन भर तुम्हारा उपकार नहीं भूलेंगे। हमारे लिए भी एक बड़ा-सा गड्ढा खोद दो। फिर जब राक्षस जंगल से बाहर चला जाएगा, तो हम निश्चिंत होकर जंगल में रहने लगेंगे।'' बात समाप्त करते ही सियार रोने लगा।

पौमू दा अहसान जताते हुए बोला--''वैसे तो अब वक्त बिल्कुल नहीं है। जब तक मैं तुम्हारे लिए गड्ढा खोदता हूं तब तक तो राक्षस इधर आ ही धमकेगा, लेकिन तुमको मैं उस खुदे हुए गड्ढे में छिपा देता हूं और अपने लिए दूसरा गड्ढा खोदता हूं। इससे ज्यादा मैं कर ही क्या सकता हूं।''

चारों सियार खुशी से झूम उठे। सब पौमू दा के पैरों में सिर टेकने लगे, वे पौमू दा के साथ गड्ढे की ओर चल पड़े। कुछ देर बाद वे गड्ढे के पास पहुंच गए।

एक-एक कर गड्ढे के अन्दर जाने लगे। चौथा सियार गड्ढे में जाने ही वाला था, तभी उनके कानों में आवाज पड़ी--''पौमू दा आ गया है, पौमू दा आ गया है।'' यह आवाज उस काने सियार की थी। संयोग से वह अपने भाइयों के साथ उधर आ पहुंचा था। पौमू दा को देखकर अपने भाइयों को सचेत करने के उद्देश्य से वह चिल्लाया था।

चौथे सियार ने चेतावनी को समझ लिया। वह गड्ढे में जाने की अपेक्षा हड़बड़ा कर उसी ओर भाग खड़ा हुआ, जहां से आवाज आ रही थी। उसके भागते ही पौमू दा ने तेजी से गड्ढे को मिट्टी से पाट दिया।

अब तीन सियार उसके कब्जे में आ गये थे। इसके बाद उसने गड्ढे के ऊपर आग जला दी। कुछ ही देर में वे तीनों सियार ठंडे हो गये।

पौमू दा ने गड्ढा खोला, सियारों की खाल उतार ली और एक को वैसे ही कंधे पर रखकर घर की ओर चल पड़ा।

घर पहुंच कर पौमू दा ने दो खालें अपनी पत्नी को सौंप दीं और मरे हुए सियार को एक कोने में रख दिया। फिर उसने खाना खाया और सोने चला गया। अभी उसने पत्नी की शर्त पूरी करनी थी। कुल मिलाकर छह सियारों की खालें तो ले आया था। किन्तु एक खाल की कमी पड़ गयी। आधी रात तक उस नींद नहीं आयी। वह सातवीं खाल लाने के बारे में माथा-पच्ची करता रहा। अन्त में उसे एक कारगर तरकीब सूझ ही गयी। तरकीब निकलते ही उसकी आंखें लग गयी।

अगले दिन सुबह वह देर से उठा। नाश्ता किया। फिर सियार को उसने कंधे पर उठाया और चल पड़ा। लेकिन इस बार वह जंगल की ओर नहीं बल्कि अपने मक्का के खेत की ओर गया। जल्दी ही वह मक्का के खेत में पहुंच गया। खेत में मक्का पक रही थी। उसने एक बड़ा गड्ढा खोदा। फिर उसके ऊपर पुआल बिछा दिया। इसके बाद सियार को पास ही खड़ा कर दिया।

उस मक्का के खेत में सियार भूलकर भी नहीं आते थे। इसका कारण यह था कि एक बार उस खेत में किसी ने बहुत पहले एक सियार मार दिया था। उस खेत के आसपास तो सियार आते थे, किन्तु उस खेत में पैर नहीं रखते थे। शायद वे उसे खूनी खेत समझते थे।

हमेशा की तरह दोपहर को सियारों की एक टोली मक्का के खेतों में आ धमकी। उस खेत में अपने बन्धु सियार को देखकर दो चार सियार उस खेत की तरफ लपके। देखते ही देखते वे उस मरे हुए सियार के निकट पहुंच गए।

उस टोली में वह काना सियार भी था। उसे कुछ शक पड़ गया। उसने इधर-उधर नजर दौड़ाई। अचानक उसकी नजर खेत के एक कोने में छिपे पौमू दा पर पड़ गयी। अब क्या था। उसे पहचानते ही वह चिल्ला उठा--"पौमू दा छिपा हुआ है, पौमू दा छिपा हुआ है।"

अब तक पौमू दा के नाम से जंगल के सारे सियार पूर्णतया परिचित हो गये थे। सुनते ही सब अपनी-अपनी जान बचा कर सिर पर पैर रख कर भागने लगे। सियारों की भगदड़ में एक सियार उस गड्ढे में गिर गया। वह गिरा तो फिर दुबारा नहीं उठ सका। मौका देखकर पौमू दा ने गड्ढे को ऊपर से पाट दिया। बेचारा सियार कुछ देर बाद दम घुटने के कारण मर गया।

कुछ देर बाद पौमू दा ने गड्ढे में पड़े सियार को बाहर निकाला। फिर उसने दोनों सियारों की खाल उतारी। दो खालें लेकर वह घर की ओर चल पड़ा।

उस दिन उसका रोम-रोम प्रसन्नता से पुलकित हो रहा था। घर आते ही उसने दोनों खालें अपनी पत्नी को सौंप दीं। सात खालें पाकर पत्नी के आश्चर्य का ठिकाना न रहा। उसकी शर्त पूरी हो गयी थी।

पौमू दा पत्नी की स्थिति को भांप गया। उसने चुनौती के स्वर में कहा, ''सात सियारों की खालें हाजिर हैं। अब यदि तू कहे तो मैं सात शेरों की अथवा सात आदमियों की खालें भी ला सकता हूं।''

यह सुनकर पत्नी डर के मारे पसीना-पसीना हो गयी। अपनी हार स्वीकार करते हुए वह पौमू दा के पैरों में पड़कर क्षमा मांगने लगी। पौमू दा ने उसे क्षमा कर दिया।

तब से दोनों पति-पत्नी हंसी-खुशी के साथ जीवनयापन करने लगे। इसके बाद पत्नी ने कभी पौमू दा को जरा भी जाने-अनजाने परेशान नहीं किया। जीवनपर्यन्त दोनों मजे से खाते-पीते आनन्द मनाते रहे।

अनमती-धनमती

किसी जंगल में एक सियार रहता था। उसके परिवार में पत्नी और बच्चे मिलाकर कुल सात प्राणी थे। सियार आलसी था। हर वक्त घर में पड़ा रहता था। सियारनी मेहनती थी। किसी तरह वह परिवार का भरण-पोषण करने लगी।

एक समय की बात है। सियारनी को गर्भ ठहर गया। उसने सियार से कहा, ''हमारे पास सिर छिपाने के लिए एक छोटा-सा घर भी नहीं है। तुम किसी तरह एक घर बना डालो।'' सियार ने पहले तो पत्नी की बात हंसी में टाल दी, लेकिन जब उसने बारम्बार आग्रह किया तो उसकी सलाह माननी ही पड़ी।

अगले दिन से सियार सुबह खा-पीकर घर से निकल जाता। दिन भर वह पैर पसार कर धूप में लेटा रहता और सूरज छिपते ही घर पहुंच जाया करता। घर आते ही धड़ाम से जमीन पर लेट जाता। पूछने पर बताता कि मकान बनाना हंसी-खेल नहीं है। कड़ी मेहनत करनी पड़ती है। सियारनी और बच्चे यह सुन कर बेहद खुश होते। इसी तरह वह रोज घर से निकल जाता और अंधेरा होने पर लौटता। वह कभी कहता कि दो दीवारें पूरी हो गयी हैं तो कभी बताता कि अब छत पड़नी बाकी रह गई है। उसकी बात पर सब विश्वास कर लेते।

काफी दिन बीत गये, लेकिन मकान बन कर तैयार ही नहीं हुआ। जैसे-जैसे सियारनी के प्रसव का समय नजदीक आने लगा उसे चिन्ता सताने लगी। लेकिन सियार मस्ती छान रहा था।

एक दिन सियारनी ने बताया कि उसे प्रसव पीड़ा शुरू हो गई है। इसलिए मकान जितना और जैसा भी बना है, हम उससे गुजारा कर लेंगे। अब सियार क्या करता। सबको लेकर चल पड़ा।

पत्नी और बच्चे नये मकान में जाने के लिए खुश थे, लेकिन सियार की तो जान सूखी जा रही थी। उनको लेकर जाये तो जाये कहां ? अब झूठ का फल मिलेगा। यही सोचता हुआ वह उदासी को छिपाये चला जा रहा था।

चलते-चलते उसके मन में विचार आया कि क्यों न बाघ की अनुपस्थिति में उसकी मांद पर कब्जा कर लिया जाए। जो कुछ होगा देखा जाएगा। यह सोचकर वह मन-ही-मन प्रसन्नता से उछलने लगा। अब तो वह डींग हांकते हुए पत्नी से कहने लगा--''मैंने इतना बड़ा घर बनाया है

कि उसमें शेर-बाघ तक का परिवार आसानी से आ सकता है। मुझे खबर मिली है कि बाघ हमारे नए मकान पर कब्जा करना चाहता है। लेकिन मैं भी कम नहीं हूं। बाघ क्या उसका बाप भी हमारे घर में जबर्दस्ती नहीं घुस सकता है। जरा घर में घुसने की हिम्मत तो करे। वह मजा चखाऊंगा कि याद करेगा।''

संयोग से बाघ उस समय शिकार करने गया हुआ था। उसके इतना कहते-कहते बाघ की मांद आ गयी और उसने घर की चौकीदारी पर बन्दर को बैठाया हुआ था। चालाक सियार को समझते तनिक भी देर न लगी कि बाघ इस समय घर में नहीं है। अब क्या था। वह बड़े रौब के साथ घर के अन्दर बढ़ने लगा। बंदर ने उसे घर में घुसने से रोका, बंदर का टोकना था कि वह उस पर टूट पड़ा। पहले तो उसने उसे खूब खरी-खोटी सुनाई, लेकिन जब बंदर पर कोई असर न हुआ तो उसने और उसके लड़के ने पीटना शुरू कर दिया। मार पड़ती देख बंदर दुम दबाकर वहां से सिर पर पैर रख कर रफूचक्कर हो गया और सियार सपरिवार बाघ की मांद में जा घुसा।

बाघ की मांद में भेड़ का मांस पड़ा हुआ था। मांस को देखकर सियार पत्नी से बोला, ''मैं एक पूरी भेड़ मारकर यहां रख गया था। दुष्ट बाघ उसे भी चट कर गया। मैंने सोचा था भेड़ वक्त-बेवक्त काम आयेगी। खैर जो हुआ सो हुआ। अब आगे से हम सबको सतर्क रहना है। बाघ हमारा शत्रु है। वह हमारे घर पर अधिकार करना चाहता है।''

सुनकर उसके बच्चे और पत्नी उसका लोहा मानने लगे। उन्हें पूर्ण विश्वास हो गया कि घर उनका ही है और बाघ ने मौका पाकर जबरन कब्जा कर लिया था। सब बाघ को कोसने लगे।

सियार गप्प तो हांक रहा था। लेकिन अन्दर ही अन्दर मारे भय के उसकी जान सूखी चली जा रही थी और उसे बाघ से निपटने की चिन्ता खाए जा रही थी। उसने पत्नी को पास बुलाया और कहा--''देखो, बाघ यहां एक-दो दिन में अवश्य आ धमकेगा। उस वक्त तुम्हें घबराने की आवश्यकता नहीं है, घर हमारा है। उसके बाप का यहां क्या लगता है। तो तुम एक बात का ध्यान रखो। बाकी मैं स्वयं सम्भाल लूंगा। जैसे ही तुम बाघ के दहाड़ने की आवाज सुनो सब बच्चों को एक-एक चपत मारकर रूला देना। जब मैं तुमसे पूछूं कि बच्चे क्यों रो रहे हैं तो तुम क्रोध में भरकर जवाब देना--''बच्चे बाघ के ताजा मांस के लिए रो रहे हैं।''

अगले दिन सबेरे-सबेरे बाघ आ पहुंचा। बन्दर को द्वार पर न देखकर उसे शक पड़ गया। उसने सोचा, 'अवश्य मेरे घर में मुझ से भी बड़ा और बलवान कोई जानवर घुस गया है।' और वह क्रोधित होकर जोर-जोर से दहाड़ने लगा।

बाघ का दहाड़ना सुनते ही सियारनी ने सब बच्चों पर बिना कुछ कहे-सुने एक-एक चपत रसीद कर दी। अब तो बच्चे एक साथ हू-हू कर रोने लगे। बच्चों का रोना था कि सियार गरजा, "बच्चे क्यों रो रहे हैं ?"

"वे बाघ का ताजा मांस मांग रहे हैं।" सियारनी ने गुस्से के लहजे में जवाब दिया।

सियार बच्चों को आश्वासन देते हुए बोला--"रोओ मत। अभी लाता हूं बाघ का ताजा मांस।"

बाघ ने सुना तो उसकी सिट्टी-पिट्टी गुम हो गई। वह सुनते ही मारे डर के पूंछ दबा कर भाग खड़ा हुआ। बाघ को भागता हुआ देख सियार मन ही मन बेहद खुश हुआ।

बाघ तो भाग गया, किन्तु सियार का भय नहीं भागा। वह भलीभांति जानता-समझता था कि बाघ दोबारा आएगा और तब उससे पीछा छुड़ाना मुश्किल होगा। उस वक्त भेद ही नहीं खुलेगा, बल्कि वह सारे परिवार को चट कर जाएगा। दिन-प्रतिदिन उसका शरीर सूखने लगा।

एक दिन सियार को एक विचित्र बात दीखी। बाघ के कंधे पर एक और बाघ चढ़कर आ रहा था। सियार तुरन्त पहचान गया। देखते ही उसके हाथ से मांस का टुकड़ा गच्च से जमीन पर गिर गया, भय के मारे उसका बुरा हाल हो गया। बाघ अपनी मदद के लिए एक और बाघ को अपने कंधे पर चढ़ाकर ला रहा था।

लेकिन सियार ने भी धीरज नहीं खोया। मुकाबले के लिए तैयार हो गया। जैसे ही बाघ मांद के द्वार पर पहुंचा, सियार क्रोध में जोर से चिल्ला उठा, "हे अनमती की मां धनमती। लौ झट्ट तैं ढपलि फ्वड्डू छौं मि तै तौला बांघै कपलि।"

अर्थात् 'हे अनमती की मां धनमती। जल्दी गंडासा ला। मैं इस नीचे वाले बाघ के सिर के खण्ड-खण्ड करता हूं।'

उस मांद के असली मालिक बाघ ने सुना तो भयभीत हो उठा। उसने सोचा इसने तो मुझे पहचान ही लिया है। अब तो जान बचने वाली नहीं है। घबरा कर उसने कंधे पर चढ़ाए बाघ को नीचे गिरा दिया और वहां से सिर पर पैर रख कर कूच कर गया। दूसरा बाघ भी उसके पीछे-पीछे भाग गया।

बाघ से सियार को मुक्ति मिल गई। वह निश्चिंत हो कर बाघ की मांद में रहने लग गया।

स्याल और तितरा (तीतर)

किसी जंगल में एक स्याल और एक तितरा रहते थे। दोनों की परस्पर गहरी दोस्ती थी। स्याल स्वभाव से ही बड़ा चालाक था और समय-समय पर वह तितरे को अपनी तीव्र बुद्धि से बेवकूफ बना दिया करता था। तितरा भोला-भाला और सीधा-सच्चा था। वह जानता था कि स्याल उसका सच्चा मित्र नहीं है, फिर भी वह उसी के मन की किया करता था।

एक दिन की बात है। स्याल ने तितरा से कहा कि हंसाने वाली कोई ऐसी बात कर जिससे हंसते-हंसते पेट में बल पड़ जाएं। यह सुन कर तितरा बेहद खुश हुआ। अब वह मौके की तलाश करने लगा।

संयोग से कुछ देर बाद उधर एक कुत्ते का आना हुआ। कुत्ते को देखकर तितरा ने स्याल को पास ही घनी झाड़ियों में छिपा दिया। फिर वह स्वयं उड़कर कुत्ते के एकदम समीप गया। जैसे ही कुत्ता उस पर झपटने लगा, वह फुर्र से उड़ कर उससे कुछ दूर जा पहुंचा। कुत्ता फिर भागा। काफी देर तक यही होता रहा। तितरा ने कुत्ते को खूब थका दिया, लेकिन वह कुत्ते की पकड़ में न आया। कुत्ता थक कर चूर-चूर हो गया। क्रोध और थकान से वह बेतहाशा हांफने लगा। हार कर उसने तितरा का पीछा करना छोड़ दिया और चुपचाप पेड़ की छाया में लेट गया।

स्याल छिप कर यह देख रहा था। वह हंसे बिना न रहा। हंसते-हंसते वह लोट-पोट हो गया। सचमुच उसके पेट में बल पड़ गये। यह देखकर तितरा उसके पास गया और बोला "अब तो तुम्हारे पेट में हंसते-हंसते बल पड़ गये हैं न।"

स्याल को लगा कि तितरा को अपनी तरकीब पर घमंड हो गया है। उससे तितरे का ज्यादा बुद्धिमान होना न सहा गया। वह उसे हराने की युक्ति सोचने लगा, अगले ही पल उसने चालाकी से कहा, "तितरा, हंसते-हंसते तो पेट में बल पड़ गये हैं। अब कोई ऐसी बात कर जिससे रोते-रोते नानी याद आ जाए।"

यह सुनकर तितरा बड़ी परेशानी में पड़ गया। रोने की भला कौन-सी बात करे। इसी सोच में वह डूब गया। कुछ देर चुप बैठा रहा। उसे चुप देख कर स्याल ने समझा कि वह हार मान रहा है। अब क्या था। स्याल उसे हिला-हिला कर रोने की बात करने के लिए विवश करने लगा।

तितरा ने कच्ची गोलियां नहीं खेली थीं। स्याल के विचित्र व्यवहार से वह तंग आ गया। आखिर उसने एक तरकीब सोच ही ली। उसने फिर स्याल को एक झाड़ी में छिपा दिया। स्वयं वह वहां से उड़ कर उसी कुत्ते के पीछे चल पड़ा।

कुछ दूर उड़ने पर वह कुत्ते के बिल्कुल समीप जा पहुंचा। कुत्ता तितरा को देखकर उसकी ओर लपका। तितरा बचकर एक ओर हो गया। कुत्ते ने उसका पीछा किया। तितरा फुदक-फुदक कर अंत में कुत्ते को लेकर उस झाड़ी के पास आ पहुंचा, जहां स्याल छिपा हुआ था। कुत्ते की नजर स्याल पर पड़ गई। वह तितरा को छोड़कर स्याल पर जा धमका। कुत्ते को अपनी ओर झपटता देख कर स्याल वहां से सिर पर पैर रख कर भाग खड़ा हुआ। अब क्या था। कुत्ते ने स्याल का पीछा करना शुरू कर दिया। स्याल किसी तरह जान बचाकर फिर कुत्ते की नजर से ओझल होकर एक झाड़ी में जा छिपा।

तितरा स्याल को देख रहा था। वह फुदक-फुदक कर फिर कुत्ते के आगे गया। कुत्ता उसे देखकर उस पर झपटा। वह फुदक-फुदक कर आगे निकल गया। कुत्ता उसका पीछा करने लगा। तितरा इस तरह फुदक-फुदक करता हुआ कुत्ते को फिर उसी झाड़ी के पास ले आया, जहां स्याल भयभीत हुआ छिपा था। स्याल को देखकर कुत्ता फिर तितरा को छोड़कर उस पर झपटा। स्याल फिर जान बचाकर भागा। अब कुत्ता उसका पीछा करने लगा। स्याल अधिक दूर न जाकर पास ही कुत्ते की नजर बचाकर एक झाड़ी में दुबक गया। कुत्ता उसकी घात लगा कर बैठ गया। तभी तितरा फुदक-फुदक कर कुत्ते के पास आया। तितरा को देख कर कुत्ता उस पर झपटा। तितरा उड़ता हुआ उस झाड़ी के पास पहुंचा, जहां स्याल छिपा हुआ था। कुत्ते ने स्याल को देख लिया। वह देखते ही उस पर टूट पड़ा। अब तो स्याल को छठी का दूध याद आ गया। साक्षात मौत को देख कर रोते-रोते उसे नानी याद आ गयी।

जब कुछ देर तक तितरा ने स्याल को इसी तरह रुलाया, तो हार मान कर उसने तितरा से प्रार्थना की कि कुत्ते से उसकी रक्षा करे। रोते हुए स्याल को देख कर तितरा को तरस आ गया। वह फुदक-फुदक करता हुआ फिर कुत्ते के सामने आया। कुत्ता उस पर झपटा। वह बच निकला। इस बार वह कुत्ते को इसी तरह बहुत दूर ले गया। फिर वह उड़ कर वापिस स्याल के पास आ गया। तितरा को अपने पास देखकर स्याल की जान में जान आ गयी।

उस दिन से स्याल ने कभी भी तितरा को सताने और नीचा दिखाने की कोशिश नहीं की। सचमुच चालाक अपनी ही चालाकी का शिकार हो जाया करता है।

लीसे की लड़की

किसी गांव में खुरपके की बीमारी फैल गयी। देखते ही देखते सारे गांव के ढोर-डंगर रोगग्रस्त हो गये। कुछ ही दिनों के अन्दर गांव के इर्द-गिर्द मरे हुए जानवरों के ढेर लग गये। चील और गिद्धों के लिए मानो त्यौहार हो गया। सियार भी कब किसी से पीछे रहने वाले थे। वे भी जहां-तहां पड़े मृत पशुओं से अपनी पेट-पूजा करने लगे।

गरमी के दिन थे। कड़ाके की गरमी पड़ रही थी। एक सियार हाल ही में मरी हुई एक भैंस को मजे से खाने लगा। चील और गिद्धों ने पहले से ही भैंस के पेट को चीर रखा था। नहीं तो सियार भला कैसे भैंस को फाड़ सकता। खाते-खाते सियार को इतना आनन्द आया कि वह सारा का सारा भैंस के पेट में घुस गया। इतने में उसका पेट भी पूरी तरह भर चुका था। उधर जैसे-तैसे वह मांस खाता गया। वैसे-वैसे चमड़ा सूखता गया। अन्त में स्थिति यहां तक पहुंच गई कि सियार अन्दर ही रह गया। अब तो अपने लोभ पर उसे बड़ा पश्चाताप होने लगा। लेकिन सियार था बड़ा होशियार। संकट में वह जरा भी नहीं घबराया और किसी उचित अवसर की प्रतीक्षा में चुपचाप अन्दर बैठा रहा।

ईश्वर को पता लगा कि सियार भैंस के पेट में फंस गया है। उन्होंने उसके साथ मजाक करने की सोची। वे हाथ में एक घंटी लेकर वहां जा पहुंचे। फिर लगे बजाने जोर-जोर से घंटी। सियार ने घंटी की आवाज सुनी, तो उसे बड़ा सहारा मिला। उसे लगा कि वह भैंस के पेट से बाहर आ गया है। उसकी खुशी का ठिकाना न रहा। उसने बड़ी चतुरता से पूछा--''बाहर कौन घंटी बजाता है।''

''नारायण''--ईश्वर ने संक्षिप्त सा उत्तर दिया।

यह सुनकर सियार व्यंग्य हंसी हंसता हुआ बोला--''नारायण। कैसा नारायण? भगवान तो यहीं बैठा है और तुम नारायण बाहर घूम रहे हो? अरे इतना सफेद झूठ तो मत बोल।''

अब तो सियार चुनौती देते हुए बोल पड़ा--''अच्छा दोनों की परीक्षा हो जाये। तू अपने को नारायण कहता है, तो तू मूसलाधार बारिश कर। मैं भगवान हूं। तब ऐसी धूप करूंगा कि तू देखता ही रह जाएगा। देखता नहीं, कितनी कड़ाके की धूप कर रखी है मैंने। मैं तो भगवान हूं। आराम से

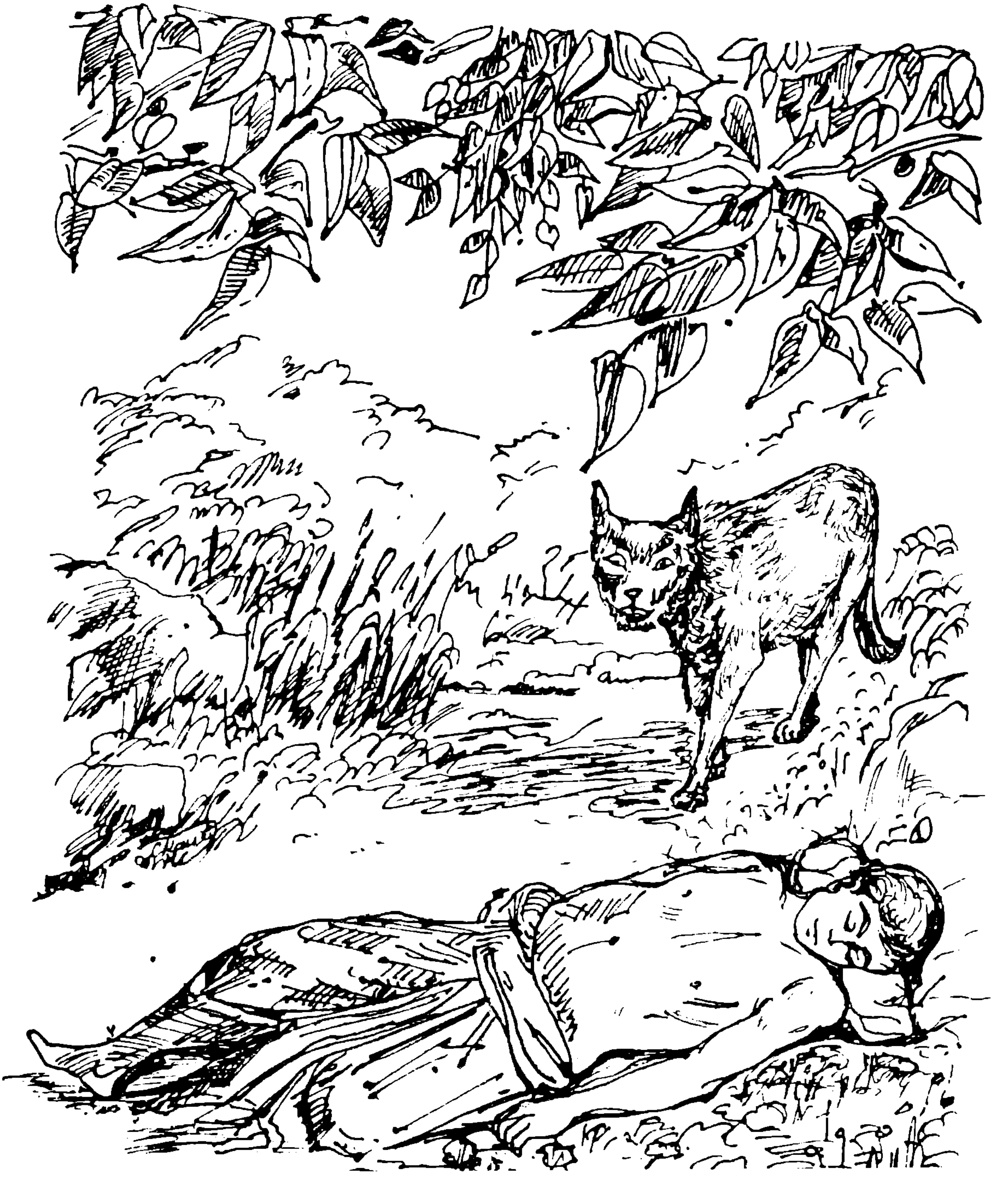

अन्दर बैठा हूं और तू धूप में परेशान होकर घंटी बजाता हुआ मेरी पूजा कर रहा है, ताकि मैं पानी बरसा दूं। नारायण होता तो बारिश के लिए मेरी पूजा क्यों करता।''

फिर क्या था। नारायण ने मूसलाधार पानी बरसा दिया। पानी पड़ने से मरी भैंस की खाल गीली हो गई। कुछ देर बाद सियार आसानी से बाहर आ गया। अब तो उसकी प्रसन्नता का ठिकाना न रहा। उसे अपनी बुद्धिमता पर बड़ा गर्व होने लगा। वह सोचने लगा कि वह तो नारायण अर्थात् ईश्वर से भी ज्यादा बुद्धिमान है। नारायण तो सियार के बाहर आने से पहले ही छिप गये थे। सियार ने चारों ओर नजर दौड़ाई लेकिन उसे इधर कोई भी नहीं दिखाई दिया। अब तो वह जोर-जोर से चिल्लाने लगा--''नारायण छम, नारायण छम'' अर्थात् नारायण को खूब छकाया। इतना चिल्लाते-चिल्लाते वह जंगल की ओर जाने लगा। मारे खुशी के उसके पैर जमीन पर ही नहीं पड़ रहे थे।

ईश्वर तो सुन ही रहे थे। उन्होंने सोचा--'कहां तो इस सियार को मेरा अहसान मानना चाहिए था और कहां यह कमबख्त सोच रहा है कि नारायण को खूब छकाया।' ऐसा विचार कर उन्होंने उस चालाक सियार को सबक सिखाने की सोची। तुरन्त उन्होंने आदमी का रूप रचा और जिधर से सियार को जंगल में प्रवेश करना था, उधर के रास्ते में पहुंच गये। फिर उन्होंने अपने एक हाथ में लीसा और दूसरे में गुड रखा। यह करने के बाद वे जमीन पर मरे हुए आदमी की तरह चित्त लेट गये।

कुछ देर बाद सियार उधर से गुजरा। मरा आदमी देखकर वह ठिठक गया। उसके हाथ में गुड और लीसा देखकर सियार का माथा ठनका। उसे समझते देर न लगी कि यह जाल उसी को फंसाने के लिए रचा गया है। अब तो उसने किसी प्रकार भी लोभ में न आने का निश्चय कर लिया। साथ ही उसने सोचा कि इस चालाक आदमी को भी मालूम हो जाना चाहिए कि सियार उससे भी चालाक होता है। यह सोच कर उसने व्यंग्यबाण छोड़ते हुए कहा ''जैका हाथ पर लूंद और गोंद, वैकू होंदु, बल क्वी त, सची नि रोंद।'' अर्थात् जिस मरे हुए आदमी के हाथ में गुड और लीसा है, काश उसका कोई होता तो उसकी मृत्यु पर रोता।

यह कहते हुए सियार आगे बढ़ गया। उधर ईश्वर ने सोचा कि सियार सरलता से बेवकूफ नहीं बनाया जा सकता। धूर्त सियार की चतुरता को देखकर वे आश्चर्य में डूबे बिना न रहे। उन्होंने मन ही मन विचार किया, 'एक साधारण सियार ने मुझे सचमुच छका दिया है।' वे शीघ्रता से सियार के आगे-आगे गये और उससे पहले एक पेड़ के नीचे जाकर बैठ गये। जब उन्हें पूरा भरोसा हो गया कि सियार उसी रास्ते से आ रहा है तो उन्होंने तुरन्त लीसे की एक खूबसूरत लड़की

बनायी। उस पर अत्यन्त आकर्षक कपड़े और आभूषण पहनाये। फिर उसके एक हाथ में चार पूरियां और दूसरे में चार पकौड़ियां पकड़ा दीं। इतना करने के बाद वे फुर्ती से पेड़ की आड़ में छिप गये।

कुछ देर बाद सियार उधर से गुजरने लगा। उसकी नजर खूबसूरत लड़की पर पड़ी। लड़की के हाथों में उसने पूरी-पकौड़ियां देखीं। उसके मुंह में पानी आ गया। उससे न रहा गया। लालच ने उसके विवेक को दबोच लिया। वह साहस कर लड़की के नजदीक आ गया। फिर लड़की से उसने रोबीली आवाज में कहा, "लड़की मुझे भी पूरी-पकौड़ी दे।" जवाब में उस लड़की ने सिर्फ सिर हिला दिया। सियार को इस पर बेहद गुस्सा आ गया। वह फिर धमकी भरे स्वर में बोला, "बड़ी बनती है। देती है तो दे, वरना एक थप्पड़ जमाऊंगा।" इस बार भी लड़की ने पहले की तरह सिर हिला दिया। चालाक सियार को अपनी उपेक्षा होती हुई नहीं देखी गई। उसने लड़की पर जोर का एक तमाचा जड़ दिया। लेकिन यह क्या। थप्पड़ मारते ही सियार का हाथ लड़की के गाल से चिपक गया। अपना हाथ चिपका हुआ देखकर सियार क्रोध में चीखा, "मेरा एक हाथ जल्दी छोड़ वरना तेरे दो गालों का अभी एक गाल कर दूंगा।" इस पर भी लड़की चुप रही। क्रोधित होकर उसने अपने दूसरे हाथ से उसके दूसरे गाल पर भी एक चपत मारी। उसका दूसरा हाथ भी वहीं चिपक गया। अब तो सियार के क्रोध का ठिकाना न रहा।

अपने को छुड़ाने के उद्देश्य से उसने एक-एक कर दायें और बायें पैर से लात मारी। दोनों पैर उसके वहीं चिपक गये। हाथ और पैर चिपक जाने के उपरान्त उसने चेतावनी देते हुए कहा, "छोकरी मेरे हाथ-पैर छोड़ दे। नहीं तो सिर से ऐसी चोट मारूंगा कि तेरा कचूमर ही निकल जाएगा।"

लड़की फिर भी मौन रही। एक क्षण सियार चुप रहा। फिर अगले ही क्षण उसने बड़े जोर से लड़की पर अपना सिर दे मारा। सिर भी हाथ-पैरों की तरह वहीं चिपक गया। अब तो सियार धर्मसंकट में पड़ गया। वह मन में सोचने लगा कि संसार में उसके समान मूर्ख कोई नहीं होगा।

सियार को लीसे की लड़की से बुरी तरह चिपका देखकर पेड़ की आड़ में छिपे नारायण मनुष्य के रूप में तत्काल वहां प्रकट हो गये। उन्होंने सियार से पूछा, "भगवन् आप लीसे की लड़की से कैसे चिपक गये हो।" यह सुनकर सियार फूट-फूट कर रोने लगा और भगवान से क्षमा मांगने लगा। नारायण ने उसे क्षमा करते हुए मुक्त कर दिया। तब से उस सियार ने फिर कभी अपनी चतुरता की डींग नहीं हांकी।

प्रकाशन विभाग
सूचना और प्रसारण मंत्रालय
भारत सरकार